Series of Thoughts
Charchika

विश्व शांति व सद्भावना के सशक्त माध्यम–रंग और प्रतीक

डा.डी.पी.सिंह
संस्थापक, कमलनिष्ठा संस्थान, कोलसिया, झुन्झुनू, राजस्थान
संस्थापक, फैडरेशन ऑफ कम्युनिटी रेडियो स्टेशन्स, नई दिल्ली
Email-drdp91@gmail.com, Mob.-9001005900
Website-kamalnishtha.org, echetana.com, fcrs.in

भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी ने कहा है कि ''यदि हम विश्व में शांति व सद्भावना लाना चाहते हैं, तो हमें इसकी शुरूआत बच्चों से करनी चाहिए।'' चूंकि, बालमन पर अंकित व्यवहार अधिक सशक्त एवं स्थायी होता है तथा साथ ही इस उम्र में पूर्वाग्रह भी कम से कम होते है। इसका आश्य है कि सीखने की यही सर्वोतम अवस्था है।

COLORING
PEACE
BOOKS

शांति एवं सद्भावना के लिए शिक्षा की शुरूआत छोटे बच्चों के साथ किया जाना बेहतरीन एवं प्रभावपूर्ण तरीका है। छोटे बच्चे रंग–रोगन की गतिविधियों में अधिक रूचि लेते है। अलग–अलग प्रकार की आकृतियों में रंग भरना, रंग बदलकर नवीन रंग भरना बच्चों को सहज व मनभावन लगता है। इस कार्य में बच्चे बाहर की अन्य बातों को पूरी तरह भूलकर पूर्ण तल्लीनता से कार्य करते है। यह कार्य एकांकी एवं समूह दोनों ही प्रकार से किया जाना पूर्णत् मनोवैज्ञानिक व तार्किक है। बालमन अकेले रहते हुए भी अपने आप की विशिष्ट व सरस दूनियां बना लेता है, जिसमें वह अपने सहचरों का सृजन कर लेता है तथा शांति व सद्भावना के लिए आवश्यक सभी मूल्य सहज ही बनने लगते है।

शांति व सद्भावना की स्थिति की आवश्यकता द्वन्द से शुरू होती है। यह द्वन्द अन्तः का भी हो सकता है तथा अर्न्तवैयक्तिक भी हो सकता है। दोनों ही स्थिति में द्वन्द का

हल सकारात्मक मानसिक परिपक्वता से ही होता है। अन्तः का द्वन्द दिखावे में कम आता है तथा इसका प्रबन्धन भी आसान है किन्तु अन्तवैयक्तिक द्वन्द को प्रबंधित करने के लिए मन को प्रशिक्षित करना आवश्यक है।

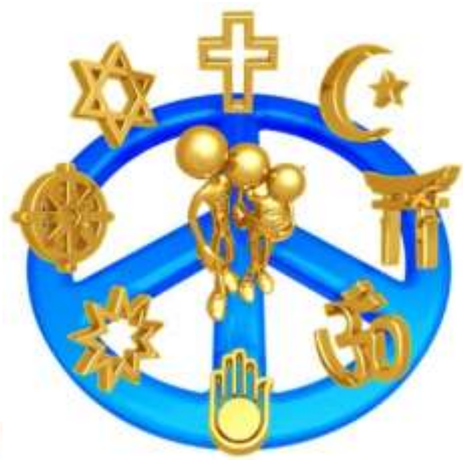

प्रायः हम देखते है कि प्रत्येक संगठन, सम्प्रदाय अर्थात् जिसमें दो या दो से अधिक लोगों का एक साथ उपस्थित होना आवश्यक हो, उनमें अर्न्तवैयक्तिक एकता के लिए परिचायक तौर पर कोई प्रतीक रखा जाता है। यह प्रतीक उस संगठन–संप्रदाय की आंतरिक शांति, सद्भावना, सौहार्द्र व एकता का परिचायक होता है। सभी सदस्य उस प्रतीक के प्रकट होते ही एक विशिष्ट भाव से औतप्रोत हो जाते है। संपूर्ण विश्व में प्रचलित सबसे बड़े सांगठनिक संप्रत्ययों यथा धर्म व ईश्वर के भी प्रतीक प्रचलन में है, जिनके दिखते ही उनके मानने वाले नतमस्तक हो जाते है। इसी भांति प्रत्येक देश अपने राष्टीय ध्वज के आगे नतमस्तक हो जाताहै। इन्हें शांति प्रतीक कहा जाना युक्तियुक्त है।

शांति के प्रतीकों के साथ कला व उद्योग में बच्चे सद्भावना, सम्मान तथा शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व को प्राकृतिक ढ़ंग से सीखते है। बच्चे अपने शांति चित्रों का सृजन करने लगते है, उनमें रंग भरने लगते है तथा छपवाने जैसी रंगीन सीट्स तैयार करने लगते है। कला एवं उद्योग खाली समय में बेहद पसन्द किया जाने वाला कार्य है जिसमें शांति और सद्भावना विकसित करने वाले प्रतीकों को शामिल किया जा सकता है।

प्रायः बच्चे–बड़े सभी विविध माध्यमों से सीखते है, यथा दृश्य, लिखित, सहभागी अनुभव आदि। छोटे बच्चों को उक्त वर्णित शांति व सद्भावना के प्रतीकों में रंग भरने की प्रक्रिया के द्वारा बचपन में ही जीवन के ध्येय से आसानी से परिचित करवाया जा सकता है। इस प्रकार शांति व सद्भावना संप्रत्यय का बचपन में मिला पुर्नबलन पूरे जीवन में

निरन्तर रहता है। शांति प्रतीक शांति, सद्भावना और आक्रामक व्यवहार के समय विकल्पात्मक व्यवहार बच्चों को सिखाता है अर्थात् विविधता का सम्मान कैसे किया जाऐ? द्वन्द के समय सहकारी भाव कैसे बनाया जाऐ?

इस प्रकार शांति प्रतीकों में रंग भरते समय तथा शांति कार्यों के बारे में बातचीत करते हुए बच्चे शांति तथा शांतिपूर्ण उपागमों के द्वारा अपना संसार बना लेते है। बच्चे स्वयं की सृजनशीलता का आनन्द लेने लगते है।

शांति उद्योग तथा कला संप्रत्ययों के माध्यम से शांति लाना विश्व की सभी संस्कृतियों में प्रचलित है। प्रायः आभूषण तथा बैजेज शांति प्रतीकों से सुशोभित होते है। बच्चे, जवान, प्रौढ़, वृद्ध सभी उन वस्त्रों, आभूषणों, बैजेज की प्रशंसा करते है, जो शांति प्रतीकों से सुशोभित हो रहे है। शांति की शिक्षा प्रत्येक को मदद करती है, नुकसान किसी को नहीं देती है। हम शांति एवं सद्भावना वाले पाठों में शांति वाले उद्योग व कला को जोड़ सकते हैं।

प्रायः देखा जाता है कि सभी राजनीतिक प्रचार तथा विश्व के नेता शांति तथा शांति प्रतीकों को ही उपयोग करके अपने कार्य को आगे बढ़ाते है तथा लोगों को सामूहिक ध्येय के प्रति एकजूट होकर कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं।

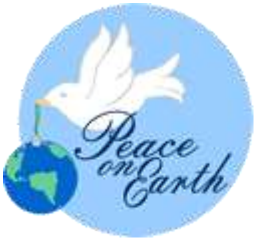

शांति के प्रतीक इस विश्व संस्कृति में बहुतायत में मौजूद है। शांति प्रतीक प्रस्तर प्रतीक तथा शांति आईकोन को शांति स्थापना के आंदोलन/संस्कृति में आसानी से पहचाना जा सकता है।

पूरे विश्व में शांति के अनेकों प्रतीक पहचाने गये है। शांति आईकोन में सर्वाधिक परिचित व प्रचलित प्रतीक कबुतर, पाख्ता, जैतून की टहनी, टुटा हुआ हथियार को चुना गया है तथा युद्ध संबंधी विध्वंस को रोकने के लिए प्रसारित किया गया है।

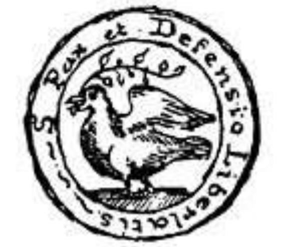

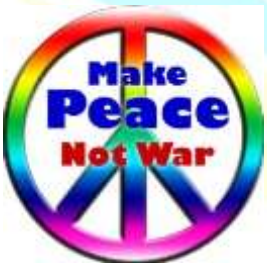

गोलचक्र में अंग्रेजी वर्णमाला के 'वी' की आकृति को भी शांति प्रतीक के रूप में प्रचलित किया जा रहा है।

शांति के लिए कला एवं क्राफ्ट कार्य शांति प्रतीकों के साथ बच्चों एवं प्रौढ़ों द्वारा खूब पसन्द किया जाता है, क्योंकि यह आशा व जिज्ञासा को बांटने के लिए विश्व में चर्चित है। आज शांति के लिए शिक्षण करवाना पूरे विश्व का ध्येय है तथा इस संबंध में बच्चों के लिए पाठों का आदान–प्रदान करके हम अपना ही लाभ बनाते है। दयालुता तथा शांति से पूर्ण जीवन ही हम सभी के लिए कुछ अच्छा कर सकते हैं।

Refrences –

1. http://www.squidoo.com/peace-coloring-books
2. http://en.wikipedia.org/wiki/Teaching_for_social_justice
3. http://www.squidoo.com/peace-clipart
4. http://www.squidoo.com/peace-crafts
5. http://www.squidoo.com/rainbow-printables-arts-crafts
6. http://www.squidoo.com/mandala-coloring-adultcoloring
7. http://www.squidoo.com/free-coloring-book-pages
8. http://en.wikipedia.org/wiki/Peace#Inner_peace
9. http://www.teachkidspeace.org/
10. http://www.squidoo.com/The-Peace-Symbol-s-Birthday
11. http://www1.isawearthlings.com/
12. http://peace.mennolink.org/teachpeace/
13. http://www.mennonitemission.net/Pages/Home.aspx